# पूज्य बनने के लिए सहिष्णुता आवश्यकः आचार्यश्री महाश्रमण

## आमेट में अमृत महोत्सव, दर्-ानाचार के अन्तर्गत आज सम्यक्त्व के दूशण विशय पर होगा प्रवचन, राजा हरि-चंद्र नाटिका की प्रस्तुति आज, नेत्र चिकित्सा ि-ाविर का आयोजन

## आमेटः 22 जनवरी

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जो व्यक्ति कष्टों को सहन करने का प्रयास करता है और दूसरों को किसी तरह की तकलीफ नहीं देता, वह व्यक्ति अहिंसा को जानने वाला है। सिद्धांत के तौर पर अहिंसा को जानना भी आवश्यक है, पर संबोधि में प्रायोगिक अहिंसा को जानना बताया गया है।

आचार्यश्री ने उक्त उद्गार यहां अहिंसा समवसरण में चल रहे अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में रविवार को प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कष्ट सहिष्णुता अहिंसा के लिए आवश्यक है। कठोरता को सहन करने की प्रवृति व्यक्ति में अवश्य होनी चाहिए, जो नहीं सीखता वो काम को मंजिल तक नहीं पहुंचा सकता। डरपोक आदमी बडा काम कर ही नहीं सकता। नीति सूत्र में भी कुछ इस तरह से ही बताया गया है। विघ्नों के डर से काम शुरू नहीं करने वाले निम्न श्रेणी में आते है। कुछ शुरू तो करते है लेकिन विघ्न आने की आशंका पर उसे बीच में ही छोड देते है। कुछेक ऐसे होते है जो सभी तरह की समस्याओं और कठिनाईयों का सामना करते हुए काम को पूरा करने के बाद ही चैन की सांस लेते है। ऐसे व्यक्ति उत्तम श्रेणी में आते है। उन्होंने कहा कि परेशानियों से डरने की नहीं अपितु इसका सामना करने की आवश्यकता है। कभी भी गर्मी से डरना नहीं चाहिए, बल्कि अपने शरीर को उसे सहन करने के लायक बना लेना चाहिए। व्यक्ति को अपने शरीर की रचना इस तरह से करने की आवश्यकता है कि किसी भी तरह का मौसम हो। वह सदैव उसका सामना करने के लिए तैयार रहे। मौसम में आने वाली बीमारियों से डटकर मुकाबला करने की आवश्यकता है। शरीर की क्षमता कठिनाईयों को सहन करने वाली होनी चाहिए। वाचिक सहिष्णुता भी आवश्यक है। जो कटु और अवमानना वाली बातों को सहन कर लेता है वह पूज्य होता है। मानसिक सहनशक्ति भी जरूरी है।

आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में कार्य करते है और साधना करते हुए कष्ट तो आ ही जाते है। पर मानवीय संतुलन नहीं खोना चाहिए। शांत भाव से इन मानसिक कष्टों को सहन करें। आचार्यश्री तुलसी के सामने अनेक कष्ट आए, लेकिन वे कभी इनसे विचलित नहीं हुए। उस समय उन्होंने कष्टों को झेला। आचार्यश्री महाप्रज्ञ मुनि अवस्था में आचार्यश्री तुलसी के साथ थे। वे भी सहन करने में सहभागी रहे थे। आचार्यश्री भिक्षु ने भी बहुत कठिनाईयों का सामना किया। उनमें सहन करने की शक्ति थी। उसी का

परिणाम है कि तेरापंथ में समरसता का विकास हुआ है। संबोधि में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि जो व्यक्ति अप्रिय वाणी, कर्म और आचरण को सहन करने वाला होता है वह अहिंसक की श्रेणी में आता है। प्रिय-अप्रिय व्यवहार होने की स्थिति में भी सामने वाले के प्रति समता का भाव रखा जाता है तो यह भी एक बडी साधना के समान है। व्यक्ति को जीवन में इस सूत्र को अपनाने की महत्ती आवश्यकता है कि जिस तरह के व्यवहार अथवा कर्म की वह दूसरों की अपेक्षा नहीं करता। उस तरह के आचरण और कर्म को स्वयं भी नहीं करें। कोई अभद्र भाषा का का उच्चारण कर रहा है अथवा तिरस्कार की दृष्टि से आचरण कर रहा है तो उसी के अनुरूप व्यवहार करने की बजाय विनयशील बनने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति आगम की साधना करता है उसे देवलोक में भी स्थान मिलता है। गुरु द्वारा यदा कदा कही जाने वाली कठोर बातों, उलाहना, परिषद् के बीच डांटने की प्रवृति को अन्यथा लेने की बजाय यदि हम उसे विनयपूर्वक ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो हमारा जीवन सार्थक हो सकता है। गुरु अपने शिष्य और समाज के किसी व्यक्ति को गल्ती करने पर उलाहना दे सकता है। जो शिष्य अपने गुरु की डांट को सह लेते है। गुस्से और आवेश में नहीं आता। वह महानता की ओर अग्रसर होता है। साधु-साध्वियां कश्ट सहिश्णुता के साथ अहिंसा को पुश्ट रखने का प्रयास करें। कठिनाई को समता भाव से झेल सके और मौसम के अनुसार कश्ट को सहन कर सके वह महान निर्जरा की ओर अग्रसर होता है।

**गीता और संबोधि में समानता**

आचार्यश्री ने कहा कि भागवत गीता और संबोधि में एक समानता है। संबोधि में जहां भगवान महावीर स्वामी और उनके शिष्य मेघ की परस्पर बातों का संवाद है वहीं गीता में भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच की बातों का उल्लेख मिलता है। इसलिए धर्म ग्रंथ का स्वाध्याय करने की जरुरत है। इससे मार्गदर्शन प्राप्त होगा और अपने जीवन की समस्याओं से बचने के उपाय मिलेंगे। आध्यात्म के ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

**साहित्यकार मौलिक लेखन करें**

आचार्यश्री ने भारतीय इतिहास संकलन समिति चित्तौड प्रांत की ओर से प्रका-ित भारतीय इतिहास के जैन स्त्रोत पुस्तक का विमोचन करते हुए कहा कि वर्तमान में अनेक पुस्तकों का प्रका-न हो रहा है परन्तु केवल संख्या बढाने के उद्दे-य से ग्रंथों का प्रका-न नहीं करवाना है। लेखकों द्वार मौलिक बातों को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास होना चाहिए। अन्यथा ग्रंथ की उपादेयता गौण है। हम सारभूत ज्ञान को ग्रहण करें, लेखन विद्या आराधना की बात है। इसमें कितनी गहराई है यह महत्वपूर्ण विशय है। स्वयं के लेखन में परिश्कार का प्रयास किया जाना चाहिए। पढने और ग्रहण करने की स्थिति लेखक को आगे की तरफ बढाती है। साधु-साध्वियां भी लेखन का कार्य करती है, लेकिन उन्हें सामान्य नहीं बल्कि उच्च्व स्तर के ग्रंथों का अध्ययन करने की आव-यकता है। सामान्य स्तर के ग्रंथ पढने से बौद्धिक स्तर भी सामान्य ही रह सकेगा। गहरा पढेंगे तो लिखने का स्तर भी बढेगा। इस अवसर पर इतिहास संकलन समिति के महामंत्री

छगनलाल बोहरा ने ग्रंथ की जानकारी दी। समिति के अध्यक्ष डॉ. केएस गुप्ता, महावीर प्रसाद जैन, हिम्मत दुग्गड, हरकलाल पामेचा ने विचार व्यक्त किए। सोमवार को दर्-ानाचार प्रवचन माला के अन्तर्गत सम्यक्त्व के दूशण विशय पर आचार्यश्री व्याख्यान देंगे। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री रेणु छाजेड ने बताया कि सोमवार :ााम को सात बजे तेरापंथ महिला मंडल आमेट की ओर से अहिंसा समवसरण में सत्यवादी हरि-ाचंद्र की नाटिका की प्रस्तुति दी जाएगी। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।